

SUSTAINABLE DEVELOPMENT : ISSUES AND CHALLENGES

REVISION CLASS 01 FOR DECEMBER 2024

MUST WATCH ALL IMPORTANT TOPICS INCLUDED

1. Define the term Sustainability. Discuss the origins of the term Sustainable Development.

Sustainability refers to the ability to maintain or improve certain processes or conditions over the long term without depleting natural resources, damaging the environment, or harming future generations. It emphasizes the need for balance between economic, social, and environmental factors to ensure that progress today does not come at the expense of future well-being.

सततता उस क्षमता को कहते हैं, जो किसी प्रक्रिया या स्थिति को लंबे समय तक बनाए रखने या सुधारने की होती है, बिना प्राकृतिक संसाधनों को समाप्त किए, पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए, या भविष्य पीढ़ियों के लिए हानि पहुँचाए। यह आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय तत्वों के बीच संतुलन की आवश्यकता पर बल देता है ताकि आज की प्रगति भविष्य की भलाई की कीमत पर न हो।

Origins of Sustainable Development

The term "Sustainable Development" gained prominence with the publication of the **Brundtland Report** in 1987, titled "Our Common Future." The report, by the World Commission on Environment and Development (WCED), defined sustainable development as meeting the needs of the present without compromising the ability of future generations to meet their own needs. It highlighted the interconnectedness of environmental, social, and economic issues, pushing for a more holistic approach to development.

सतत विकास की उत्पत्ति

"सतत विकास" शब्द 1987 में **ब्रंडटलैंड रिपोर्ट** के प्रकाशन के साथ प्रमुख हुआ, जिसका शीर्षक था "हमारा सामान्य भविष्य"। यह रिपोर्ट विश्व पर्यावरण और विकास आयोग (WCED) द्वारा तैयार की गई थी और इसमें सतत विकास को इस तरह परिभाषित किया गया था: वर्तमान की जरूरतों को इस तरह पूरा करना कि भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता पर कोई असर न पड़े। इसमें पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक मुद्दों के आपसी संबंध को उजागर किया गया और विकास के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाने का आह्वान किया गया।

What is sustainable livelihood ? Briefly explain different types of capital assets for achieving sustainable livelihood.

Sustainable Livelihood refers to the capacity of individuals, households, or communities to secure and maintain a way of life that is economically viable, socially just, and

environmentally sustainable over time. It involves having access to resources that allow people to meet their basic needs and improve their quality of life while conserving the environment for future generations.

सतत आजीविका का मतलब है व्यक्तियों, परिवारों या समुदायों की वह क्षमता जो उन्हें एक ऐसा जीवन स्तर बनाए रखने में सक्षम बनाती है जो आर्थिक रूप से सक्षम, सामाजिक रूप से न्यायसंगत और पर्यावरणीय रूप से सतत हो। इसका मतलब है कि लोगों के पास ऐसे संसाधनों तक पहुंच हो, जो उन्हें अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने और जीवन स्तर को सुधारने में मदद करें, जबकि भविष्य पीढ़ियों के लिए पर्यावरण का संरक्षण भी हो।

Different Types of Capital Assets for Achieving Sustainable Livelihood

1. Human Capital

Human capital refers to the skills, knowledge, education, and health that individuals or communities possess. It is essential for securing employment, improving productivity, and adapting to changing environmental or economic conditions.

मानवीय पूंजी

मानवीय पूंजी से तात्पर्य उस कौशल, ज्ञान, शिक्षा और स्वास्थ्य से है जो व्यक्तियों या समुदायों के पास होता है। यह रोजगार प्राप्त करने, उत्पादकता बढ़ाने और बदलते पर्यावरणीय या आर्थिक परिस्थितियों के अनुकूल होने के लिए महत्वपूर्ण है।

2. Social Capital

Social capital refers to the networks, relationships, and social structures that enable people to work together for mutual benefit. Strong social networks are crucial for sharing resources, knowledge, and support.

सामाजिक पूंजी

सामाजिक पूंजी से तात्पर्य उन नेटवर्कों, रिश्तों और सामाजिक संरचनाओं से है जो लोगों को एक साथ मिलकर आपसी लाभ के लिए काम करने की अनुमति देती हैं। मजबूत सामाजिक नेटवर्क संसाधनों, ज्ञान और समर्थन को साझा करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

3. Natural Capital

Natural capital consists of the natural resources and ecosystem services, such as land, water, air, biodiversity, and minerals, that people rely on for survival and livelihood. Maintaining these resources sustainably is vital for long-term livelihood security.

प्राकृतिक पूंजी

प्राकृतिक पूंजी में प्राकृतिक संसाधन और पारिस्थितिकी तंत्र की सेवाएं शामिल हैं, जैसे भूमि, पानी, वायु, जैव विविधता और खनिज, जिन पर लोग अपनी जीवन रक्षा और आजीविका के लिए निर्भर करते हैं। इन संसाधनों का सतत रूप से प्रबंधन करना दीर्घकालिक आजीविका सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।

4. Financial Capital

Financial capital includes savings, credit, and access to financial institutions. It enables individuals or communities to invest in livelihood activities, cope with financial shocks, and enhance overall economic resilience.

वित्तीय पूंजी

वित्तीय पूंजी में बचत, ऋण और वित्तीय संस्थानों तक पहुंच शामिल है। यह व्यक्तियों या समुदायों को आजीविका गतिविधियों में निवेश करने, वित्तीय झटकों से निपटने और समग्र आर्थिक लचीलापन बढ़ाने में सक्षम बनाती है।

5. Physical Capital

Physical capital refers to the infrastructure and tools required for productive activities, such as roads, buildings, machinery, and technology. Access to physical capital enables individuals and communities to increase efficiency and productivity.

भौतिक पूंजी

भौतिक पूंजी से तात्पर्य उस बुनियादी ढांचे और उपकरणों से है जो उत्पादक गतिविधियों के लिए आवश्यक होते हैं, जैसे सड़कें, इमारतें, मशीनरी और प्रौद्योगिकी। भौतिक पूंजी तक पहुंच व्यक्तियों और समुदायों को दक्षता और उत्पादकता बढ़ाने में सक्षम बनाती है।

Briefly explain any five challenges to sustainable economic growth.

Challenges to Sustainable Economic Growth refer to obstacles that hinder the ability to achieve long-term economic progress while ensuring environmental preservation and social equity. Here are five key challenges:

सतत आर्थिक विकास के लिए चुनौतियाँ उन समस्याओं को कहते हैं जो पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक समानता सुनिश्चित करते हुए दीर्घकालिक आर्थिक प्रगति प्राप्त करने की क्षमता को रोकती हैं। यहां पांच प्रमुख चुनौतियाँ दी गई हैं:

1. Environmental Degradation

The over-exploitation of natural resources, deforestation, and pollution lead to environmental degradation. This results in climate change, loss of biodiversity, and depletion of natural resources, all of which threaten the sustainability of economic growth.

पर्यावरणीय गिरावट

प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक शोषण, वनों की कटाई और प्रदूषण पर्यावरणीय गिरावट का कारण बनते हैं। इसके परिणामस्वरूप जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का नुकसान और प्राकृतिक संसाधनों का क्षय होता है, जो आर्थिक विकास की स्थिरता को खतरे में डालते हैं।

2. Income Inequality

Economic growth often benefits certain sections of society more than others, leading to income inequality. This disparity can undermine social stability, reduce access to education and healthcare, and hinder overall sustainable development.

आय में असमानता

आर्थिक विकास अक्सर समाज के कुछ वर्गों को दूसरों से अधिक लाभ पहुंचाता है, जिससे आय में असमानता पैदा होती है। यह असमानता सामाजिक स्थिरता को कमजोर कर सकती है, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच को कम कर सकती है और समग्र सतत विकास में रुकावट डाल सकती है।

3. Resource Scarcity

As populations grow and demand for resources increases, there is a growing scarcity of vital resources like water, energy, and raw materials. This scarcity can limit economic growth and make it unsustainable in the long run.

संसाधनों की कमी

जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती है और संसाधनों की मांग बढ़ती है, पानी, ऊर्जा और कच्चे माल जैसे महत्वपूर्ण संसाधनों की कमी होती जाती है। यह कमी आर्थिक विकास को सीमित कर सकती है और इसे दीर्घकालिक रूप से अस्थिर बना सकती है।

4. Technological Challenges

While technology can drive economic growth, there are challenges related to ensuring that technological advancements are environmentally sustainable and accessible to all sections of society. Without inclusive access, economic benefits may not be equally distributed.

प्रौद्योगिकी से जुड़ी चुनौतियाँ

हालांकि प्रौद्योगिकी आर्थिक विकास को बढ़ावा दे सकती है, लेकिन इसके पर्यावरणीय रूप से सतत और समाज के सभी वर्गों तक पहुंच सुनिश्चित करने से संबंधित चुनौतियाँ हैं। यदि समावेशी पहुंच नहीं होती, तो आर्थिक लाभ समान रूप से वितरित नहीं हो सकते।

5. Political Instability and Poor Governance

Political instability and weak governance structures can disrupt economic activities, discourage investments, and hinder long-term economic planning. Poor governance can also lead to corruption, inefficient use of resources, and hinder progress towards sustainability.

राजनीतिक अस्थिरता और खराब शासन

राजनीतिक अस्थिरता और कमजोर शासन संरचनाएँ आर्थिक गतिविधियों को बाधित कर सकती हैं, निवेशों को हतोत्साहित कर सकती हैं और दीर्घकालिक आर्थिक योजना में रुकावट डाल सकती हैं। खराब शासन से भ्रष्टाचार, संसाधनों का अक्षम उपयोग और सततता की ओर प्रगति में रुकावट हो सकती है।

What is agroforestry ? Give examples and advantages of multipurpose trees along the boundaries of the field

Agroforestry is a land-use management system that combines agriculture and forestry practices to create more sustainable and productive land-use systems. It integrates trees, crops, and livestock on the same land, enhancing biodiversity, improving soil fertility, and providing multiple economic benefits.

एग्रोफॉरेस्ट्री एक भूमि उपयोग प्रबंधन प्रणाली है जो कृषि और वानिकी प्रथाओं को जोड़ती है, जिससे अधिक सतत और उत्पादक भूमि उपयोग प्रणालियाँ बनती हैं। इसमें एक ही भूमि पर पेड़, फसलें और मवेशी मिलाकर जैव विविधता को बढ़ावा देना, मिट्टी की उर्वरता में सुधार करना और कई आर्थिक लाभ प्रदान करना शामिल है।

Examples of Agroforestry

1. **Alley Cropping:** Growing crops in rows between trees planted in alleys. This method helps in soil conservation and provides additional income through tree products.

अली क्रॉपिंग: पेड़ों के बीच फसलों को पंक्तियों में उगाना। यह विधि मिट्टी के संरक्षण में मदद करती है और वृक्ष उत्पादों के माध्यम से अतिरिक्त आय प्रदान करती है।

2. **Silvopasture:** Integrating trees and grazing livestock. This practice provides shade for animals, while trees offer timber or fruit.

सिल्वोपास्चर: पेड़ों और चरते मवेशियों को एक साथ मिलाना। इस अभ्यास से पशुओं को छांव मिलती है, जबकि पेड़ लकड़ी या फल प्रदान करते हैं।

3. **Agroforestry in Windbreaks:** Planting trees along the boundaries of fields to protect crops from strong winds.

विंडब्रेक्स में एग्रोफॉरेस्ट्री: खेतों की सीमाओं पर पेड़ लगाना ताकि फसलों को तेज हवाओं से बचाया जा सके।

Advantages of Multipurpose Trees Along the Boundaries of the Field

1. **Soil Conservation:** The roots of boundary trees help in preventing soil erosion and improving soil structure by binding the soil together.

मिट्टी का संरक्षण: सीमा पर लगाए गए पेड़ों की जड़ें मिट्टी के कटाव को रोकने में मदद करती हैं और मिट्टी की संरचना में सुधार करती हैं, क्योंकि ये मिट्टी को एक साथ बांधकर रखती हैं।

2. **Windbreak and Protection:** Trees act as windbreaks, reducing the impact of strong winds on crops, preventing crop damage, and enhancing yields.

हवाओं से सुरक्षा: पेड़ हवा को रोकने का काम करते हैं, जिससे फसलों पर तेज हवाओं का प्रभाव कम होता है, फसल के नुकसान को रोका जा सकता है और उपज में वृद्धि होती है।

3. **Biodiversity Enhancement:** The presence of trees increases biodiversity by providing habitats for birds, insects, and small animals, which contribute to pest control.

जैव विविधता का संवर्धन: पेड़ों की उपस्थिति जैव विविधता बढ़ाती है, क्योंकि ये पक्षियों, कीड़ों और छोटे जानवरों के लिए आवास प्रदान करती हैं, जो कीट नियंत्रण में मदद करते हैं।

4. **Additional Income:** Trees planted along field boundaries can provide valuable products such as timber, fruits, nuts, or medicinal plants, adding another source of income.

अतिरिक्त आय: खेतों की सीमाओं पर लगाए गए पेड़ मूल्यवान उत्पाद जैसे लकड़ी, फल, मेवे या औषधीय पौधे प्रदान कर सकते हैं, जिससे आय का एक और स्रोत मिलता है।

5. **Microclimate Regulation:** The trees help in regulating the microclimate by providing shade, reducing temperature extremes, and increasing humidity, benefiting both crops and livestock.

सूक्ष्म जलवायु का नियंत्रण: पेड़ छांव प्रदान करके, तापमान की चरम स्थितियों को कम करके और आर्द्रता बढ़ाकर सूक्ष्म जलवायु को नियंत्रित करने में मदद करते हैं, जिससे फसलें और मवेशियों दोनों को लाभ होता है।

What is the full form of PIL ? How does it help as a tool for environmental protection ? Discuss any three inherent limitations of environmental PIL.

PIL stands for **Public Interest Litigation**. It is a legal tool that allows individuals or groups to approach the court for the protection of public interest, including issues related to the environment, human rights, and social justice, even if they are not personally affected by the issue.

PIL का पूरा नाम **जनहित याचिका** है। यह एक कानूनी उपकरण है, जो व्यक्तियों या समूहों को सार्वजनिक हित की रक्षा के लिए अदालत से संपर्क करने की अनुमति देता है, जिसमें पर्यावरण, मानव अधिकारों और सामाजिक न्याय से संबंधित मुद्दे शामिल होते हैं, भले ही वे व्यक्तिगत रूप से प्रभावित न हों।

How PIL Helps as a Tool for Environmental Protection

1. **Raising Environmental Issues:** PIL can be used to bring environmental issues, such as pollution, deforestation, and wildlife protection, before the court. It helps in highlighting issues that might otherwise be ignored by the authorities.

पर्यावरण संरक्षण के लिए PIL का योगदान

1. **पर्यावरणीय मुद्दों को उठाना:** PIL का उपयोग पर्यावरणीय मुद्दों, जैसे प्रदूषण, वनों की कटाई और वन्यजीवों की सुरक्षा, को अदालत में लाने के लिए किया जा सकता है। यह उन मुद्दों को उजागर करने में मदद करता है जिन्हें अन्यथा अधिकारियों द्वारा अनदेखा किया जा सकता है।
2. **Enforcing Environmental Laws:** PIL helps ensure the enforcement of existing environmental laws and regulations, making it a tool for holding authorities accountable for environmental violations.

पर्यावरण कानूनों का पालन कराना: PIL मौजूदा पर्यावरण कानूनों और नियमों के पालन को सुनिश्चित करने में मदद करता है, और यह पर्यावरण उल्लंघनों के लिए अधिकारियों को जिम्मेदार ठहराने का एक उपकरण बन जाता है।

3. **Promoting Public Awareness:** PILs can also raise public awareness about environmental issues, encouraging collective action for environmental protection and creating a platform for public participation in environmental governance.

सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाना: PIL पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने में मदद कर सकते हैं, पर्यावरण संरक्षण के लिए सामूहिक कार्रवाई को प्रोत्साहित करते हैं और पर्यावरणीय शासन में सार्वजनिक भागीदारी के लिए एक मंच प्रदान करते हैं।

Three Inherent Limitations of Environmental PIL

1. **Limited Scope of Jurisdiction:** Courts may only entertain PILs that fall under their jurisdiction. If the case is related to an issue outside the purview of the judiciary, it may not be considered.

कानूनी क्षेत्राधिकार की सीमा: अदालतें केवल उन PILs को स्वीकार करती हैं जो उनके क्षेत्राधिकार के तहत आते हैं। यदि मामला न्यायपालिका के दायरे से बाहर है, तो उसे माना नहीं जा सकता।

2. **Lack of Proper Monitoring:** After a PIL is filed, the monitoring and enforcement of court orders can be challenging. There is often a lack of follow-up, making it difficult to ensure that the orders are implemented effectively.

सही निगरानी का अभाव: जब एक PIL दायर की जाती है, तो अदालत के आदेशों की निगरानी और पालन करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। अक्सर फॉलो-अप की कमी होती है, जिससे यह सुनिश्चित करना कठिन हो जाता है कि आदेश प्रभावी ढंग से लागू किए जाएं।

3. **Misuse of PIL:** Sometimes, PILs are filed for personal or political reasons rather than for genuine public interest. This misuse can delay the legal process and waste judicial resources.

PIL का दुरुपयोग: कभी-कभी PILs व्यक्तिगत या राजनीतिक कारणों से दायर की जाती हैं, न कि वास्तविक सार्वजनिक हित के लिए। इस दुरुपयोग से कानूनी प्रक्रिया में देरी हो सकती है और न्यायिक संसाधनों का अपव्यय हो सकता है।

PDF IS ON MY WEBSITE

hindustanknowledge.com

Join whatsapp channel

Watch other videos in the playlist

Scholarly Minds